"सत्य की जीत"

— द्वारिका प्रसाद 'माहेश्वरी'

कथावस्तु / सारॉंश / प्रमुख घटनाएँ

कथासार / कथानक / संक्षिप्त कथानक

घटनाओं का ↓ सारॉंश / खण्डकाव्य का सार

↓ ↓ ↓

Scanned by TapScanner

उत्तर—'सत्य की जीत' श्री द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी द्वारा रचित खण्डकाव्य है जिसका कथानक महाभारत के सभा-पर्व से लिया गया है। इसकी कथा द्रौपदी चीरहरण से सम्बद्ध है। संक्षेप में इस खण्डकाव्य का कथानक निम्न प्रकार है :

दुर्योधन पाण्डवों को द्यूतक्रीड़ा हेतु आमन्त्रित करता है। दुर्योधन तथा पाण्डवों के मध्य द्यूतक्रीड़ा प्रारम्भ होती है जिसमें युधिष्ठिर निरन्तर हारते रहते हैं। एक-एक करके वे अपना सर्वस्व जुए में हार जाते हैं। बाद में दुर्योधन के उकसाने पर वे द्रौपदी को दांव पर लगाते हैं और हार जाते हैं। दुर्योधन द्रौपदी को अपमानित करने के लिए दुःशासन से उसे सभा में लाने के लिए कहता है। इस घटना को इस खण्डकाव्य का सर्वाधिक मार्मिक प्रसंग कहा जा सकता है। दुःशासन द्रौपदी के बाल पकड़कर सभा में लाता है और दुर्योधन भरी-सभा में द्रौपदी को वस्त्रहीन करने का आदेश देता है। भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, धृतराष्ट्र एवं विदुर जैसे विद्वान श्रेष्ठजन इस अन्याय को देखकर भी चुप रहते हैं। द्रौपदी के लिए यह अपमान असहनीय होता है और वह सिंहनी के समान गरजती हुई दुःशासन से कहती है :

अरे ओ दुःशासन! निर्लज्ज,
देख तू नारी का भी क्रोध।
किसे कहते उसका अपमान,
कराऊंगी मैं इसका बोध॥

Scanned by TapScanner

इसके पश्चात् द्रौपदी और दुःशासन में नारी पर पुरुषों द्वारा किए अत्याचार, नारी और पुरुष की सामाजिक समानता और उनके अधिकार, शक्ति, सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म, शस्त्र-शास्त्र, न्याय-अन्याय आदि विषयों पर वाद-विवाद होता है। द्रौपदी कहती है कि संसार के कल्याण के लिए नारी को महत्व देना आवश्यक है। द्रौपदी सभा में उपस्थित विद्वानों तथा श्रेष्ठजनों से पूछती है कि युधिष्ठिर को उसे दाँव पर लगाने का क्या अधिकार है? द्रौपदी के इस तर्क से सभी सभासद सहमत होते हैं।

द्रौपदी कहती है कि सरल हृदय युधिष्ठिर कौरवों की कुटिल चाल में फँस गए हैं, अतः धर्म एवं नीति के ज्ञाता निर्णय दें कि क्या वे अधर्म और कपट की विजय को स्वीकार करते हैं अथवा सत्य और धर्म की हार को स्वीकार करते हैं? द्रौपदी के इन तर्कों को सुनकर दुःशासन कहता है कि शास्त्र बल से बड़ा शस्त्र बल होता है। कर्ण, शकुनि, दुर्योधन इस बात का समर्थन करते हैं, लेकिन विकर्ण इस कथन का विरोध करते हुए कहता है कि यदि शास्त्र बल से शस्त्र बल ऊंचा होता है तो मानवता का विकास सम्भव नहीं हो सकता। विकर्ण कहता है कि द्रौपदी विजित नहीं है, अतः द्रौपदी द्वारा प्रस्तुत तर्क पर न्यायसंगत एवं धर्मपूर्वक निर्णय होना चाहिए।

सभी सभासद विकर्ण की बात सुनकर दुर्योधन, दुःशासन आदि की निन्दा करते हैं, परन्तु कर्ण दुःशासन से द्रौपदी का चीरहरण करने को कहता है। पांचों पाण्डव अपने वस्त्र उतार देते हैं। दुःशासन द्रौपदी के वस्त्र खींचने के लिए हाथ बढ़ाता है तभी द्रौपदी बलपूर्वक उसे रोककर कहती है कि वह किसी भी तरह विजित

Scanned by TapScanner

नहीं है तथा दुःशासन उसके प्राण रहते उसका चीरहरण नहीं कर सकता। उसके सम्मुख द्रौपदी अपने सम्पूर्ण आत्मबल के साथ सत्य का सहारा लेकर उसे ललकारते हुए वस्त्र खींचने की चुनौती देती है यह सुनकर मदान्ध दुःशासन वस्त्र खींचने हेतु पुनः हाथ बढ़ाता है। द्रौपदी रौद्ररूप धारण कर लेती है जिससे दुःशासन सहम जाता है तथा स्वयं को चीरहरण में असमर्थ अनुभव करता है। सभी सभासद द्रौपदी के सत्य, तेज और सतीत्व के आगे निस्तेज हो जाते हैं। वे कौरवों को अनीति की राह पर चलता देखकर उनकी निन्दा करते हैं तथा द्रौपदी के सत्य तथा न्यायपूर्ण पक्ष का समर्थन करते हैं।

द्रौपदी पुनः मदान्ध दुर्योधन, दुःशासन, कर्ण आदि को ललकारती हुई घोषणा करती है :

और तुमने देखा यह स्वयं
कि होते जिधर सत्य औ न्याय।
जीत होती उनकी ही सदा
समय चाहे जितना लग जाय।।

Scanned by TapScanner

सभी सभासद कौरवों की निन्दा करते हुए अनुभव करते हैं कि इस अन्याय को रोकना परम आवश्यक है अन्यथा प्रलय आ जाएगी।

अन्त में महाराज धृतराष्ट्र उठकर सभा को शान्त करते हैं। वे दुर्योधन की भूल स्वीकार करते हुए क्षमायाचना करते हैं। वे पाण्डवों की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि उन्होंने सत्य, धर्म एवं न्याय के मार्ग को नहीं छोड़ा। महाराज धृतराष्ट्र दुर्योधन को नीति की दुहाई देते हुए पाण्डवों को मुक्त करने तथा उनका राज्य लौटाने का आदेश देते हुए कहते हैं :

नीति समझो मेरी यह स्पष्ट,
जिएं हम और जिएं सब लोग।

इसके पश्चात् वे द्रौपदी का पक्ष लेते हुए उसके साथ किए दुर्व्यवहार की क्षमा मांगते हैं। वे सत्य, न्याय, धर्म की प्रतिष्ठा तथा पाण्डवों के कल्याण की कामना करते हुए कहते हैं :

''तुम्हारे साथ तुम्हारा सत्य,
शक्ति श्रद्धा, सेवा और कर्म।
यही जीवन के शाश्वत मूल्य,
इन्हीं पर टिका मनुज का धर्म।
इन्हीं का लेकर दृढ़ अवलम्ब,
चल रहे हो तुम पथ पर अभय।
तुम्हारा गौरवपूर्ण भविष्य
प्राप्त होगी पग-पग पर विजय।''

इस प्रकार 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य द्रौपदी चीर-हरण की मार्मिक घटना पर आधारित है तथा पाठकों को प्रभावित कर सकने में पूर्ण सफल है।

Scanned by TapScanner

"सत्य की जीत"

प्र०- [विशेषताएँ / काव्यगत विशेषताएँ
खण्डकाव्य की समीक्षा / भावपक्षीय
कलापक्षीय विशेषताएँ]

↓ ↓ ↓

Gyansindhu C. C.

1. लघुता में विशालता :-

सत्य की जीत खण्डकाव्य में कवि ने द्रौपदी चीर-हरण की छोटी-सी घटना को विशाल वस्तु-योजना के साथ प्रस्तुत करके महाभारत काल के साथ-साथ आधुनिक युग की सामाजिक विसंगतियो पर आक्रोश व्यक्त किया है—

Scanned by TapScanner

2. मौलिकता :-

प्रस्तुत खण्डकाव्य की कथा में मौलिकता विद्यमान है। कवि ने द्रौपदी चीर-हरण की पौराणिक घटना का वर्णन कर आधुनिक नारी की स्थिति का दर्शन कराया है।

3. उदात्त आदर्शों का स्वर :-

'सत्य की जीत' खण्ड काव्य में उदात्त आदर्शों का स्वर मुखरित हुआ है। द्रौपदी चीर हरण की घटना के माध्यम से द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी जी ने उदात्त आदर्शों की स्थापना करने की कोशिश की है।

Gyan Sindhu

4. रस योजना :-

प्रस्तुत खण्डकाव्य में वीर एवं रौद्र रस की प्रधानता है।

5. अलंकार योजना :-

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य में उपमा, उत्प्रेक्षा, रुपक आदि अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया गया है।

6. संवाद योजना एवं नाटकीयता :-

प्रस्तुत खण्डकाव्य में कवि ने संवाद योजना का उपयोग इतनी कुशलता से किया है कि इसमें नाटकीयता एवं चित्रोपम छटा के दर्शन होते हैं।

यथा —

"अरे! ओ दुर्योधन निर्लज्ज,
कर रहा क्यों बढ़-बढ़ कर बात।"

Scanned by TapScanner

7. उद्देश्य :—

प्रस्तुत खण्डकाव्य में कवि का उद्देश्य असत्य पर सत्य की विजय दिखाना है। मूल उद्देश्य मानवीय सद्गुणों एवं उदात्त भावों को चित्रित करके समाज में इनकी स्थापना करना है।

Gyansindhu Coaching Classes

Scanned by TapScanner

[द्रौपदी : चरित्र-चित्रण]

1. खण्डकाव्य की नायिका :—

द्रौपदी 'सत्यकी जीत' खण्डकाव्य की नायिका है। खण्डकाव्य की सम्पूर्ण कहानी उसके चारों ओर घूमती है। द्रौपदी पाण्डवों की पत्नी तथा राजा द्रुपद की पुत्री है।

२. स्वाभिमानिनी :-

द्रौपदी एक स्वाभिमानिनी नायिका के रूप में चित्रित है। वह अपना अपना सम्पूर्ण नारी जाति का अपमान समझती है।

Scanned by TapScanner

3. विवेकशील :-

द्रौपदी एक विवेकशील विदुषी नारी है, भरी सभा मे वह सिद्ध कर देती है कि जो व्यक्ति स्वयं को दाँव मे हार गया हो उसे पत्नी को दाँव पर लगाने का कोई अधिकार नही है।

4. सत्यनिष्ठ एवं न्यायप्रिय नारी :-

द्रौपदी अपने प्राणों को बलिदान करके भी सत्य और न्याय का पालन करना चाहती है। क्योंकि वह दुःशासन से कहती है -

"न्याय मे रहा मुझे विश्वास
सत्य मे शक्ति अनन्त महान।
मानती आई हूँ मैं सतत,
सत्य ही है ईश्वर, भगवान॥"

5. वाक्पटु सम्पन्न एवं वीरांगना :-

द्रौपदी मे वाक-चातुर्य होने के साथ ही ओज की साक्षात् प्रतिमूर्ति है। वह वीरांगना है, वह कोई अबला नारी नही है।

6. नारी जाति का आदर्श :-

नायिका द्रौपदी सम्पूर्ण भारतीय नारी जाति के आदर्श के रूप मे चित्रित है। वह कहती है -

"पुरुष के पौरुष से ही सिर्फ, बनेगी धरा नहीं यह स्वर्ग।
चाहिए नारी का नारित्व, तभी यह पूरा होगा सर्ग॥"

अतः स्पष्ट है, सत्य की जीत खण्डकाव्य की नायिका द्रौपदी कथानक के अनुकूल चरित्र वाली नायिका है।

Scanned by TapScanner

नायक : युधिष्ठिर

(चरित्र चित्रण)

Gyansindhu Coaching Classess
Contact for any problem -
whatsapp - 8074725514 / Join our Telegram channel for PDF/Notes

परिचय :-

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी जी द्वारा रचित सत्य की जीत खण्डकाव्य में युधिष्ठिर को खण्डकाव्य के नायक के रूप में स्थापित किया गया है, युधिष्ठिर की चारित्रिक विशेषताएं निम्न लिखित हैं —

1. सरल हृदय वाला :—

युधिष्ठिर एक सरल हृदयी व्यक्तित्व का धनी नायक है, क्योंकि वह सरलता से ही शकुनि के मायाजाल में फंस जाते हैं, और जुए में सब कुछ हार बैठते हैं।

2. अदूरदर्शी :-

नायक युधिष्ठिर व्यावहारिक रूप से कुशल नायक नहीं है परन्तु सैद्धान्तिक रूप से कुशल अवश्य हैं। दूरगामी परिणाम को बिना सोचे कदम उठाते हैं, जिसके चलते उनको चीर-हरण की घटना को देखना पड़ता है।

Scanned by TapScanner

3. धीर-गम्भीर :-

युधिष्ठिर धीर एवं गम्भीर व्यक्तित्व वाले नायक हैं। दुःशासन जब चीर-हरण की घटना को अंजाम देता है तब भी युधिष्ठिर चुप रहते हैं, यह उनकी दुर्बलता नहीं है बल्कि उनकी धीरता व गम्भीरता वाला गुण है।

Youtube

4. धर्म एवं सत्य के अवतार :-

महाराज युधिष्ठिर धर्मराज के साक्षात अवतार हैं। सत्य एवं धर्म के प्रति अडिग आस्था वाले धर्मराज युधिष्ठिर के इन्हीं गुणों के कारण महाराज धृतराष्ट्र कहते हैं कि हे। युधिष्ठिर तुम अपना राज्य सम्भालो और राज करो।

5. विश्व कल्याण के अग्रदूत :-

महाराज युधिष्ठिर को खण्डकाव्य में विश्व कल्याण के अग्रदूत के रूप में चित्रित किया गया है।

धृतराष्ट्र, युधिष्ठिर से कहते हैं, कि "तुम्हारा ध्येय विश्व कल्याण है, क्योंकि सम्पूर्ण विश्व तुम्हारे साथ है।"

* Gyansindhu Coaching Classes. *

निष्कर्षतः यह कह सकते हैं, नायक युधिष्ठिर धीर-गम्भीर होने के साथ-साथ धर्मनिष्ठ एवं सत्य के अवतार स्वरूप चित्रित हैं।

Scanned by TapScanner

[दुःशासन का चरित्र-चित्रण]

* धुर्योधन का छोटा भाई ⇐

* धृतराष्ट्र का पुत्र ⇐

1. दुराचरण वाला — :—

2. अहंकारी एवं बुद्धिहीन :—

3. नारी की उपेक्षा करने वाला :—

4. शस्त्र बल विश्वासी :—

5. सत्य एवं सतीत्व से पराजित :—

Scanned by TapScanner